आज़ादी का
अमृत महोत्सव

संस्कृतभाषा अभ्यासपुस्तिका

वेदभूषणप्रथमवर्षम् / प्रथमा प्रथमवर्षम् / कक्षा षष्ठी

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदसंस्कृतशिक्षा-बोर्ड

(भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयेन संस्थापिता मानिता च)

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥
समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि, न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
सुखिनस्तु कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ।

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम् ,उज्जयिनी (म.प्र.)

(भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयः)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

प्रथमः पाठः

संस्कृत-वर्णमाला

संस्कृतभाषायां 63/64 वर्णाः सन्ति। ते वर्णाः त्रिधा विभजिताः भवन्ति। यथा-

१. स्वराः २. अयोगवाहाः ३. व्यञ्जनानि चेति।

त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।

प्राकृते संस्कृते चाऽपि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा ॥

प्राकृतनाम्न्यां (वैदिकभाषारूपप्रकृतिप्रसूतायां) भाषायां, व्याकरणप्रक्रिया-परिष्कृतायां संस्कृत-भाषायां वर्णानां संख्या ६३ (त्रिषष्टिः) ६४ (चतुष्षष्टिः) वा इति ब्रह्मणा उपदिष्टम् अस्ति।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।

यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥

अकारादिस्वरवर्णानां संख्या एकविंशतिः (२१), कादिस्पर्शवर्णानां संख्या पञ्चविंशतिः (२५), यादि-अन्तस्स्थ-वर्णाः (४) एवम् ऊष्मसंज्ञकाः वर्णाः (४), अष्टौ (८), चत्वारः यमसंज्ञकाः वर्णाः कथिताः।

अनुस्वारो विसर्गश्च ×क ×पौ चापि पराश्रितौ।

दुस्स्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च ॥

सर्वदा स्वरवर्णात् पश्चादागच्छन् नासिकास्थानः वर्णविशेषः अनुस्वारः (अं), विसर्गः (अः) ‘क’ परकः अर्धविसर्गः एवं ‘ख’ परकः अर्धविसर्गः जिह्वामूलीयः, ‘प’ परकः अर्धविसर्गः एवं ‘फ’ परकः अर्धविसर्गः उपध्मानीयः , दुःस्पृष्टः (ळ), प्लुतः च ज्ञातव्यः।

उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः।

ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमा अचि॥ (पाणिनीयशिक्षा ११)

स्वरवर्णाः

स्वतन्त्ररूपेण स्पष्टम् उच्चार्यमाणाः वर्णाः स्वराः कथ्यन्ते स्वयं राजन्ते इति कारणेन। तत्र स्वरेषु त्रयः विभागाः सन्ति, यथा - १. ह्रस्वस्वरवर्णाः, २. दीर्घस्वरवर्णाः, ३. प्लुतस्वरवर्णाश्च।

ह्रस्वस्वरवर्णाः- एकमात्राकालेन उच्चार्यमाणाः स्वराः ह्रस्वस्वराः कथ्यन्ते। ते यथा - अ, इ, उ, ऋ, ऌ इति। यथा- अग्निः, इन्द्रः, उषा, ऋषिः, ऌकारः

१. **दीर्घस्वरवर्णाः-** द्विमात्राकालेन उच्चार्यमाणाः स्वराः दीर्घस्वराः कथ्यन्ते, यथा - आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ इति। **यथा-** आदित्यः, ईश्वरः, ऊर्णनाभः, ॠकारः, एला, ऐरावत, ओङ्कारः, औषधम्।

२. **प्लुतस्वरवर्णाः-** त्रिमात्राकालेन उच्चार्यमाणाः स्वराः प्लुतस्वराः कथ्यन्ते, यथा - आ३, ई३, ऊ३, ॠ३, ऌ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३ इति। ऌकारस्य प्लुतत्वं केचन न गृह्णन्ति।

अयोगवाहाः

अनुस्वारः - अं, विसर्गः- अः,
जिह्वामूलीयः ᳵ क ᳵ ख, उपध्मानीयः - ᳶ प ᳶ फ।

व्यञ्जनवर्णाः

अर्धमात्राकालेन उच्चार्यमाणाः वर्णाः व्यञ्जनवर्णाः इत्युच्यन्ते। व्यञ्जनवर्णानां प्रधानतया द्वौ विभागौ स्तः। वर्गीयव्यञ्जनम्, अवर्गीयव्यञ्जनञ्चेति।

वर्गीयव्यञ्जनानि पञ्चविंशतिः सन्ति, तानि क-च-ट-त-पवर्गेण विभजितानि भवन्ति। अर्थात् कवर्णादारभ्य मपर्यन्तवर्णानि वर्गीयव्यञ्जनानि कथयन्ति।

अवर्गीयव्यञ्जनानि अष्टौ वर्तन्ते, तानि यथा - य् व् र् ल् श् ष् स् ह् इति।

य् व् र् ल् इत्येते अन्तःस्थसंज्ञकाः भवन्ति एवञ्च श् ष् स् ह् इत्येते ऊष्म-संज्ञकाः भवन्ति। आहत्य व्यञ्जनवर्णाः त्रयस्त्रिंशत् (३३) सन्ति।

संयुक्ताक्षराणि -

क्ष-त्र-ज्ञ-इत्येतानि न पृथग् अक्षराणि। ककार-षकारयोर्योगे **क्ष**, जकार-ञकारयोर्योगे **ज्ञ**, तकार-रकारयोः योगे च **त्र** इति ज्ञेयम्।

अ अ अ अ अ अ अ अ अ

अ अ अ अ अ अ अ अ अ

आ आ आ आ आ आ आ आ आ

आ आ आ आ आ आ आ आ आ

इ इ इ इ इ इ इ इ इ

इ इ इ इ इ इ इ इ इ

ई ई ई ई ई ई ई ई ई

ई ई ई ई ई ई ई ई ई

उ उ उ उ उ उ उ उ उ

उ उ उ उ उ उ उ उ उ

ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ

ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ

ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ

ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ

ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ

ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ

ए ए ए ए ए ए ए ए ए

ए ए ए ए ए ए ए ए ए

ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ

ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ

औ औ औ औ औ औ औ औ औ

औ औ औ औ औ औ औ औ औ

अं अं अं अं अं अं अं अं अं

अं अं अं अं अं अं अं अं अं

अः अः अः अः अः अः अः अः अः

अः अः अः अः अः अः अः अः अः

क क क क क क क क क क क
क क क क क क क क क क क
ख ख ख ख ख ख ख ख ख ख ख
ख ख ख ख ख ख ख ख ख ख ख
ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग
ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग
घ घ घ घ घ घ घ घ घ घ घ
घ घ घ घ घ घ घ घ घ घ घ
ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ
ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ
च च च च च च च च च च च
च च च च च च च च च च च
छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ
छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ
ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज
ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज

झ झ झ झ झ झ झ झ झ झ झ

झ झ झ झ झ झ झ झ झ झ झ

ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ

ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ ञ

ट ट ट ट ट ट ट ट ट ट ट

ट ट ट ट ट ट ट ट ट ट ट

ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ

ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ

ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड

ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड ड

ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ

ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ

ण ण ण ण ण ण ण ण ण ण ण

ण ण ण ण ण ण ण ण ण ण ण

त त त त त त त त त
त त त त त त त त त
थ थ थ थ थ थ थ थ थ
थ थ थ थ थ थ थ थ थ
द द द द द द द द द
द द द द द द द द द
ध ध ध ध ध ध ध ध ध
ध ध ध ध ध ध ध ध ध
न न न न न न न न न
न न न न न न न न न
प प प प प प प प प
प प प प प प प प प
फ फ फ फ फ फ फ फ फ
फ फ फ फ फ फ फ फ फ

ब ब ब ब ब ब ब ब ब

ब ब ब ब ब ब ब ब ब

भ भ भ भ भ भ भ भ भ

भ भ भ भ भ भ भ भ भ

म म म म म म म म म

म म म म म म म म म

य य य य य य य य य

य य य य य य य य य

र र र र र र र र र

र र र र र र र र र

ल ल ल ल ल ल ल ल ल

ल ल ल ल ल ल ल ल ल

व व व व व व व व व

व व व व व व व व व

श श श श श श श श श
श श श श श श श श श
ष ष ष ष ष ष ष ष ष
ष ष ष ष ष ष ष ष ष
स स स स स स स स स
स स स स स स स स स
ह ह ह ह ह ह ह ह ह
ह ह ह ह ह ह ह ह ह
क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष
क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष
त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र
त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र
ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ
ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञ

ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ

ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ ङ

ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च

ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च ञ्च

श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र

श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र श्र

गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा

गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा

चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु

चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु चञ्चु

चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा

चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा चन्द्रमा

शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर

शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर शङ्कर

का का का का का का का का का

का का का का का का का का का

कि कि कि कि कि कि कि कि कि

कि कि कि कि कि कि कि कि कि

की की की की की की की की की

की की की की की की की की की

कु कु कु कु कु कु कु कु कु

कु कु कु कु कु कु कु कु कु

कू कू कू कू कू कू कू कू कू

कू कू कू कू कू कू कू कू कू

कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ

कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ कृ

कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ

कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ कॢ

के के के के के के के के के
के के के के के के के के के
कै कै कै कै कै कै कै कै कै
कै कै कै कै कै कै कै कै कै
को को को को को को को को को
को को को को को को को को को
कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ
कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ
कं कं कं कं कं कं कं कं कं
कं कं कं कं कं कं कं कं कं
कः कः कः कः कः कः कः कः कः
कः कः कः कः कः कः कः कः कः

द्वितीयः पाठः

माहेश्वरसूत्राणि

हिमालयस्य सानुप्रदेशे वर्षोपाध्यायनामा आचार्य अध्यापयन्ति स्म। तस्य छात्रेषु अन्यतमः छात्रः पाणिनिः आसीत्। ये कैलासपर्वतम् आगत्य शिवस्य उग्रं तपः अकरोत्। तपप्रभावात् सन्तुष्टः शिवः प्रत्यक्षं भूत्वा अनृत्यत् तथा च चतुर्दशवारं (14) ढक्काम् अनादयत्। वर्णजालमयः चतुर्दश-सूत्ररूपः (माहेश्वराणि सूत्राणि) सः नादः व्याकरणशास्त्रस्य रचनायाः कारणम् अभवत्।

महर्षिः पाणिनिः प्रणीते व्याकरणशास्त्रस्य ग्रन्थे अष्टौ अध्यायाः सन्ति, अतः 'अष्टाध्यायी' इति अस्य अपरं नाम। अष्टाध्यायी ग्रन्थे आहत्य ३९६४ सूत्राणि सन्ति। महर्षेः पाणिनेः सूत्राणि, कात्यायनस्य वार्तिकानि, महर्षेः पतञ्जलेः महाभाष्यं चेति इदं त्रिमुनि व्याकरणं कथ्यते।

महेश्वरात् आगतानि, अतः माहेश्वराणि सूत्राणि उच्यन्ते। तानि सूत्राणि इमानि सन्ति -

१.	अ इ उ ण्	२.	ऋ ऌ क्	३.	ए ओ ङ्
४.	ऐ औ च्	५.	ह य व र ट्	६.	ल ण्
७.	ञ म ङ ण न म्	८.	झ भ ञ्	९.	घ ढ ध ष्
१०.	ज ब ग ड द श्	११	ख फ छ ठ थ च ट त व्	१२.	क प य्
१३.	श ष स र्	१४.	ह ल्		

एतेषु सूत्रेषु अन्ते स्वररहितं व्यञ्जनं वर्तते। एतेन अन्तिमवर्णेन सह आद्यः वर्णः यदा उच्चार्यते तदा मध्ये विद्यमानाः सर्वे वर्णाः सङ्गृहीताः भवन्ति। यथा - अ इ उ ण् इति सूत्रस्थम् अकारं गृहीत्वा 'ऐ औ च्' सूत्रस्थेन अन्तिमेन चकारेण सह उच्चारणे सति अच् इति प्रत्याहारः निष्पद्यते। अनेन अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ इति वर्णाः सङ्गृहीताः भवन्ति। एवं निष्पन्नः अच्छब्दः प्रत्याहारत्वेन व्याकरणशास्त्रे प्रसिद्धः।

प्रत्याहारेषु इत्संज्ञकानां वर्णानाम् ग्रहणं न भवति। यथा - अण् इत्युक्ते अ इ उ इति त्रीणि अक्षराणि गृह्यन्ते। यद्यपि प्रत्याहाराः बहवः भवितुमर्हन्ति, तथापि महर्षिः पाणिनिः तत्र व्याकरणसूत्रेषु (४२)द्विचत्वारिंशत्-प्रत्याहारान् एव प्रयुक्तवान्। तेषु प्रत्याहारेषु कांश्चन प्रत्याहारान् अत्र प्रदर्शयामः। यथा-

अण्	अ, इ, उ
अच्	अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ (सर्वे स्वराः)
इक्	इ, उ, ऋ, ऌ
एच्	ए, ओ, ऐ, औ
जश्	ज, ब, ग, ड, द

यण्	य, व, र, ल

वर्णानाम् उत्पत्तिस्थानम् -

वर्णानाम् उत्पत्तिस्थानविषये पाणिनीयशिक्षायां कथितमस्ति यत्-

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलञ्च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः। इचुयशानां तालु। ऋटुरषाणां मूर्धा। ऌतुलसानां दन्ताः। उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ। ञमङणनानां नासिका च। एदैतोः कण्ठतालु। ओदौतोः कण्ठोष्ठम्। वकारस्य दन्तोष्ठम्। जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्। नासिका अनुस्वारस्य।

वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि

कण्ठः	तालु	मूर्धा	दन्ताः	ओष्ठौ	नासिका	कण्ठतालु	कण्ठोष्ठम्	दन्तोष्ठम्	जिह्वामूलम्
अ	इ	ऋ	ऌ	उ	ञ्	ए	ओ	व्	ᳵ क
क्	च्	ट्	त्	प्	म्	ऐ	औ		ᳵ ख
ख्	छ्	ठ्	थ्	फ्	ङ्				
ग्	ज्	ड्	द्	ब्	ण्				
घ्	झ्	ढ्	ध्	भ्	न्				
ङ्	ञ्	ण्	न्	म्					
ह्	य्	र्	ल्	ᳵ प्					
:	श्	ष्	स्	ᳵ फ्					

अभ्यासप्रश्ना:

1. अष्टाध्यायी व्याकरणसूत्राणां प्रणेता क: ?
2. महेश्वरसूत्राणि कति सन्ति ? यथाक्रमं नामानि लिखत ।
3. वर्णानामुच्चारणस्थानानि कति भवन्ति ? तेषां नामानि लिखत ।
4. महर्षि: पाणिनि: व्याकरणसूत्रेषु कति प्रत्याहारान् प्रयुक्तवान् ? तेषु नवीनांप्रत्यहारानां नामानि लिखत ।
5. अष्टाध्याय्यां कति सूत्राणि च सन्ति ?

तृतीयः पाठः

कर्तृक्रियासम्बन्धः

अकारान्त-पुँल्लिङ्गशब्दप्रयोगः (सचित्रम्)

	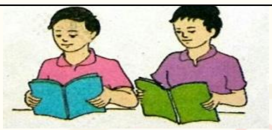	
छात्रः पठति।	छात्रौ पठतः।	छात्राः पठन्ति।
सिंहः गर्जति।	सिंहौ गर्जतः।	सिंहाः गर्जन्ति।
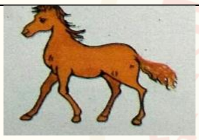	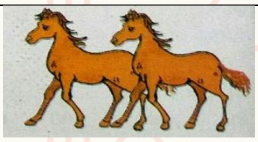	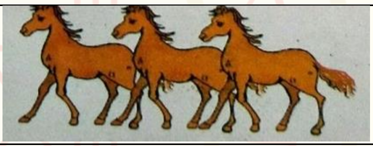
अश्वः धावति।	अश्वौ धावतः।	अश्वाः धावन्ति।

अकारान्तः पुँल्लिङ्गः वेद-शब्दः		
वेदः	वेदौ	वेदाः
वेदम्	वेदौ	वेदान्
वेदेन	वेदाभ्याम्	वेदैः
वेदाय	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
वेदात्/वेदाद्	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
वेदस्य	वेदयोः	वेदानाम्
वेदे	वेदयोः	वेदेषु
हे वेद!	हे वेदौ !	हे वेदाः!

राम, कृष्ण, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक, मातुल, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), चिकित्सक (वैद्य), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), केशव नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य, जनक (पिता), मधुप (भौंरा), सुत (पुत्र), पुत्र, काण (काना), गर्दभ, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक) इत्यादयः शब्दाः। एतेषां रूपाणि रामशब्दवत् चलन्ति।

आकारान्त-स्त्रीलिङ्गशब्दप्रयोगः (सचित्रम्)

छात्रा लिखति।	छात्रे लिखतः।	छात्राः लिखन्ति।
गायिका गायति।	गायिके गायतः।	गायिकाः गायन्ति।
	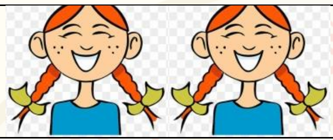	
बाला हसति।	बाले हसतः।	बालाः हसन्ति।

आकारान्तस्त्रीलिङ्गः रमा-शब्दः		
रमा	रमे	रमाः
रमाम्	रमे	रमाः
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
रमायाम्	रमयोः	रमासु
हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

एवमेव - शाखा, विद्या, संहिता, बालिका, लता, जटा, माला, शिखा, रेखा, कन्या, भार्या (पत्नी), बडवा (घोडी), राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला, बाला (स्त्री), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), इत्यादयः शब्दाः।

अकारान्त-नपुंसकलिङ्गशब्दप्रयोगः (सचित्रम्)

फलं पतति।	फले पततः।	फलानि पतन्ति।
यानं चलति।	याने चलतः।	यानानि चलन्ति।
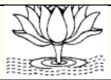	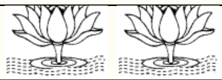	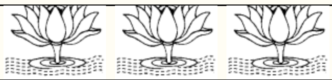
पुष्पं विकसति।	पुष्पे विकसतः।	पुष्पाणि विकसन्ति।

अकारान्तनपुंसकलिङ्गः ज्ञान-शब्दः		
ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
हे ज्ञान!	हे ज्ञाने!	हे ज्ञानानि!

एवमेव - फलम्, पुस्तकम्, वनम्, नेत्रम्, पत्रम्, पुष्पम्, मित्रम्, पर्णम्, यानम्, गृहम्, आम्रम्, काननम्, मूलम्, गगनम्, हिमम्, बीजम्, जलम्, नक्षत्रम्, मुखम्, पत्रम्, पुण्यम्, रजतम् इत्यादयः शब्दाः।

अभ्यासप्रश्नाः

1. वेदशब्दस्य रूपाणि लिखत ।
2. भू-पच्-लिख्-पठ् धातोः लट्लकारस्य रूपाणि लिखत ।
3. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग रमाशब्दस्य, लताशब्दस्य च रूपाणि लिखत ।
4. अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-फलशब्दस्य ज्ञानशब्दस्य च रूपाणि लिखत ।

चतुर्थः पाठः

सर्वनामशब्दप्रयोगः (प्रथमो भागः)

पुँल्लिङ्गम्		प्रथमपुरुषः		
		सः	तौ	ते
		एषः	एतौ	एते

सः शिक्षकः।	एषः विद्यालयः।	कः बालः?
तौ शिक्षकौ।	एतौ विद्यालयौ।	कौ बालौ?
ते शिक्षकाः।	एते विद्यालयाः।	के बालाः?

स्त्रीलिङ्गम्		प्रथमपुरुषः		
		सा	ते	ताः
		एषा	एते	एताः
		का ?	के ?	काः ?

सा महिला।	एषा बालिका।	का छात्रा?
ते महिले।	एते बालिके।	के छात्रे?
ताः महिलाः।	एताः बालिकाः	काः छात्राः?

नपुंसकलिङ्गम्		प्रथमपुरुषः		
		तत्	ते	तानि
		एतत्	एते	एतानि
		किम् ?	के ?	कानि ?

तत् फलम्।	एतत् गृहम्।	तत्/एतत् किम्?
ते फले।	एते गृहे।	ते/एते के?
तानि फलानि।	एतानि गृहाणि।	तानि/एतानि किम्?

अभ्यासप्रश्नाः

1. तद् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे, स्त्रीलिङ्गे, नपुंसकलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।
2. एतद् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे, स्त्रीलिङ्गे, नपुंसकलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।
3. किम् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे, स्त्रीलिङ्गे, नपुंसकलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।

पञ्चमः पाठः

सर्वनामशब्दाः (द्वितीयो भागः)

भवत्-शब्दपरिचयः	प्रथमपुरुषः		
	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
	भवती	भवत्यौ	भवत्यः

भवान् शिक्षकः। भवन्तौ शिक्षकौ। भवन्तः शिक्षकाः।

भवती अध्यापिका। भवत्यौ अध्यापिके। भवत्यः अध्यापिकाः।

अन्यानि वाक्यानि -

भवान् शिष्यः	भवन्तौ शिष्यौ	भवन्तः शिष्याः
भवान् तरुणः	भवन्तौ तरुणौ	भवन्तः तरुणाः
भवती देशभक्ता	भवत्यौ देशभक्ते	भवत्यः देशभक्ताः
भवती पाचिका	भवत्यौ पाचिके	भवत्यः पाचिकाः
भवती कन्या	भवत्यौ कन्ये	भवत्यः कन्याः

युष्मद्-शब्दपरिचयः	मध्यमपुरुषः		
	त्वम्	युवाम्	यूयम्

त्वं शिक्षकः।	युवां शिक्षकौ।	यूयं शिक्षकाः।
त्वं देशभक्तः।	युवां देशभक्तौ।	यूयं देशभक्ताः।
त्वं लेखिका।	युवां लेखिके।	यूयं लेखिकाः।
त्वं सेविका।	युवां सेविके।	यूयं सेविकाः।

युष्मद्-शब्दपरिचयः	उत्तमपुरुषः		
	अहम्	आवाम्	वयम्

अहं शिक्षकः।	आवां शिक्षकौ।	वयं शिक्षकाः।
अहं देशभक्तः।	आवां देशभक्तौ।	वयं देशभक्ताः।
अहं लेखिका।	आवां लेखिके।	वयं लेखिकाः।
अहं सेविका।	आवां सेविके।	वयं सेविकाः।

अभ्यासप्रश्ना:

1. भवत् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे-स्त्रीलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।
2. युष्मद् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे-स्त्रीलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।
3. अस्मद् शब्दस्य पुंल्लिङ्गे-स्त्रीलिङ्गे च रूपाणि लिखत ।

षष्ठः पाठः

सङ्ख्यापरिचयः

पुंलिङ्गे

एकः सभागारः	द्वौ वेदशिक्षकौ	त्रयः आचार्याः
चत्वारः वेदाः	पञ्च वृक्षाः	षट् गजाः
सप्त अश्वाः	अष्टौ विनायकाः	नव ग्रहाः

अन्यानि उदाहरणानि - दश शिष्याः। एकादश रुद्राः। द्वादश आदित्या।

स्त्रीलिङ्गे

एका बाला	द्वे माले	तिस्रः यज्ञशालाः
चतस्रः पाठशालाः	पञ्च चटकाः	षट् पिपीलिकाः
सप्त भगिन्यः	अष्टौ क्षुरिकाः	नव शिक्षिकाः

अन्यानि उदाहरणानि - दश महिलाः। एकादश अजाः। द्वादश मक्षिकाः।

नपुंसकलिङ्गे

एकं पुस्तकम्	द्वे पुष्पे	त्रीणि फलानि
चत्वारि व्यजनानि	पञ्च महाकाव्यानि	षट् पत्राणि
सप्त कदलीफलानि	अष्टौ यज्ञपात्राणि	नव रत्नानि

अन्यानि उदाहरणानि - दश उपनेत्राणि। एकादश पुस्तकानि। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि।

संख्याविचारः

अत्र केचन संख्याशब्दाः, तेभ्यः निष्पन्नाः पूरणप्रत्ययान्ताः संख्येयशब्दाश्च प्रदत्ताः। संख्येयशब्दाः त्रिषु लिङ्गेषु प्रयुज्यन्ते। त्रिसंख्यातः नवदशसंख्यापर्यन्तं सर्वाः संख्याः नित्यं बहुवचने प्रयुज्यन्ते। तत्र पञ्चतः नवदशपर्यन्तं सर्वाः अपि संख्याः त्रिषु लिङ्गेषु समानाः भवन्ति।

सङ्ख्यावाचकपूरणवाचकशब्दाः

क्र. सं.	संख्यावाचकशब्दाः				पूरणवाचकशब्दाः		
					पुँल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसके
१	एकम्	एकः	एका	एकम्	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वे	द्वौ	द्वे	द्वे	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्

३	त्रीणि	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४	चत्वारि	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि	चतुर्थः तुरीयः तुर्यः	चतुर्थी तुरीया तुर्या	चतुर्थम् तुरीयम् तुर्यम्
५	पञ्च				पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६	षट्				षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७	सप्त				सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८	अष्ट/अष्टौ				अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९	नव				नवमः	नवमी	नवमम्
१०	दश				दशमः	दशमी	दशमम्
११	एकादश				एकादशः	एकादशी	एकादशम्
१२	द्वादश				द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
१३	त्रयोदश				त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
१४	चतुर्दश				चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
१५	पञ्चदश				पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
१६	षोडश				षोडशः	षोडशी	षोडशम्
१७	सप्तदश				सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
१८	अष्टादश				अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
१९	नवदश एकोनविंशतिः ऊनविंशतिः एकान्नविंशतिः				नवदशः एकोनविंशः ऊनविंशः एकान्नविंशः	नवदशी एकोनविंशी ऊनविंशी एकान्नविंशी	नवदशम् एकोनविंशम् ऊनविंशम् एकान्नविंशम्

विंशतितः नवनवतिपर्यन्तं संख्याः सर्वदा स्त्रीलिङ्गे एकवचने च प्रयुज्यन्ते।

२०	विंशतिः	विंशः विंशतितमः	विंशी विंशतितमी	विंशम् विंशतितमम्
३०	त्रिंशत्	त्रिंशः त्रिंशत्तमः	त्रिंशी त्रिंशत्तमी	त्रिंशम् त्रिंशत्तमम्
४०	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशः चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशी चत्वारिंशत्तमी	चत्वारिंशम् चत्वारिंशत्तमम्

५०	पञ्चाशत्	पञ्चाशः पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशी पञ्चाशत्तमी	पञ्चाशम् पञ्चाशत्तमम्
६०	षष्टिः	षष्टितमः	षष्टितमी	षष्टितमम्
७०	सप्ततिः	सप्ततितमः	सप्ततितमी	सप्ततितमम्
८०	अशीतिः	अशीतितमः	अशीतितमी	अशीतितमम्
८७	सप्ताशीतिः	सप्ताशीतः सप्ताशीतितमः	सप्ताशीती सप्ताशीतितमी	सप्ताशीतम् सप्ताशीतितमम्
९०	नवतिः	नवतितमः	नवतितमी	नवतितमम्
१००	शतम्	शततमः	शततमी	शततमम्

२००	द्विशतम्	द्विशततमः	द्विशततमी	द्विशततमम्
३००	त्रिशतम्	त्रिशततमः	त्रिशततमी	त्रिशततमम्
४००	चतुश्शतम्	चतुश्शततमः	चतुश्शततमी	चतुश्शततमम्
५००	पञ्चशतम्	पञ्चशततमः	पञ्चशततमी	पञ्चशततमम्
१०००	सहस्रम्	सहस्रतमः	सहस्रतमी	सहस्रतमम्
१००००	अयुतम्	अयुततमः	अयुततमी	अयुततमम्
१०००००	लक्षम्	लक्षतमः	लक्षतमी	लक्षतमम्
१००००००	प्रयुतम्/नियुतम्	प्रयुततमः	प्रयुततमी	प्रयुततमम्
१०००००००	कोटिः	कोटितमः	कोटितमी	कोटितमम्

अभ्यासप्रश्नाः

1. १ तः १०० पर्यन्तं संख्याशब्दान् संस्कृतेन लिखत ।
2. एक-द्वि-त्रि-चतुर्-शब्दानां रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु लिखत ।
3. वेदाः, महाभूतानि, रसाः, ऋषयः, वसवश्च कति- कति भवन्ति ? तेषां नामानि लिखत ।

सप्तमः पाठः

दिनचर्या

समयः

मम नाम दिनेशः। अहं प्रातः सार्धचतुर्वादने उत्तिष्ठामि। अनन्तरं करावलोकनं भूमिप्रार्थनां च करोमि।

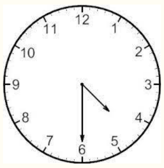

अनन्तरं पादोनपञ्चवादने शौचादिनित्यकर्म दन्तधावनं मुखप्रक्षालनं करोमि। ततः योगासनानि सूर्यनमस्कारान् च करोमि।

षड्वादने प्रातः सन्ध्यां कृत्वा पितरौ, गुरुवर्यान्, ज्येष्ठान् च अभिवादये।

तदनन्तरम् अल्पाहारं स्वीकृत्य दशोनाष्टवादने वेदपाठशालां गच्छामि। तत्र गत्वा वेदस्य संस्कृतस्य आधुनिक-पाठ्यविषयाणां च सुष्ठु अध्ययनं करोमि।

पञ्चाधिकद्वादशवादने मध्याह्नसन्ध्यां कृत्वा भोजनं स्वीकरोमि। पुनः द्विवादनात् आरभ्य चतुर्वादनपर्यन्तं शिक्षकेभ्यः पाठ्यविषयाणाम् अध्ययनं करोमि।

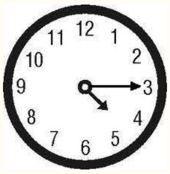

सायङ्काले सपादचतुर्वादने क्रीडाङ्गणे मित्रैः सह क्रीडामि। ततः छात्रावासम् आगत्य स्नानं कृत्वा सायं सन्ध्यां करोमि।

सार्धसप्तवादने रात्रिभोजनं कृत्वा वेदस्वाध्यायं गृहकार्यं च करोमि।

रात्रौ पञ्चोनदशवादने आदिवसम् अधीतं पाठं स्मृत्वा शयनमन्त्रान् च पठित्वा शयनं करोमि।

अभ्यासप्रश्ना:

1. निम्नलिखित समयान् अक्षरैः निर्दिशत –

   ५.००, ५.३०, ५.४५, १.००, १.३०, ९.४५, १२.४५, ३.४५, ३.३०, ६.१५, ८.१५

2. भवान् कदा स्नानं, सन्ध्यावन्दनं, योगासनं, स्वल्पाहारञ्च करोति ?

3. भवान् सायं षड्वादनतः रात्रिदशवादनपर्यन्तं किं-किं करोति पञ्चवाक्यैः लिखत ?

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

अष्टमः पाठः

सुबन्त-तिङन्त-शब्दज्ञानम् – (संज्ञापदम्, क्रियापदम्, अव्ययञ्च)

संस्कृतभाषायां सुबन्तं तिङन्तं चेति शब्दाः द्विविधाः वर्त्तन्ते। सुबन्तं नाम संज्ञापदम्। सुप् प्रत्ययान्तं सुबन्तम् इति। सुबन्तस्य मूलरूपं प्रातिपदिकसंज्ञकं भवति। यथा - राम + सु। अत्र राम इति प्रातिपदिकम्, सु इति प्रत्ययः। लिङ्गम्, विभक्तिः, वचनं चेति त्रयः अंशाः सुबन्तशब्देषु भवन्ति।

संस्कृतभाषायां सुबन्तपदानां त्रीणि लिङ्गानि भवन्ति - पुँल्लिङ्गम्, स्त्रीलिङ्गम्, नपुंसकलिङ्गं चेति। सुबन्तानाम् अर्थप्रकाशनाय संस्कृतभाषायां सप्त विभक्तयः विद्यन्ते। सम्बोधनं नाम प्रथमाविभक्तेः अवान्तरभेदोऽस्ति।

संस्कृत-भाषायाः वैशिष्ट्येषु इदम् अन्यतमम्। संज्ञापदानां क्रियापदानाञ्च वचनानि समानानि भवन्ति।

संज्ञापदानां यथायथम् अर्थज्ञानार्थं सुबन्तरूपाणां ज्ञानम् अत्यावश्यकम् अस्ति। उदाहरणतया अकारान्तः पुंलिङ्गः वेदशब्दः अत्र दर्शितः अस्ति।

अकारान्तपुंलिङ्गः वेदशब्दः

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	वेदः	वेदौ	वेदाः
द्वितीया	वेदम्	वेदौ	वेदान्
तृतीया	वेदेन	वेदाभ्याम्	वेदैः
चतुर्थी	वेदाय	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
पञ्चमी	वेदात्	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
षष्ठी	वेदस्य	वेदयोः	वेदानाम्
सप्तमी	वेदे	वेदयोः	वेदेषु
सम्बोधनम्	हे वेद !	हे वेदौ !	हे वेदाः !

तिङन्तम् -

तिङादि-प्रत्ययाः अन्ते यस्य तत् तिङन्तम्। तिङन्तस्य अपरं नाम क्रियापदम् इति। तिङन्तस्य क्रियापदस्य वा मूलरूपं धातुः अस्ति। संस्कृतभाषायां प्रायशः द्विसहस्रं धातवः वर्तन्ते। एते धातवः त्रिधा विभक्ताः सन्ति। यथा - परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी चेति। तिङन्ताः (क्रियापदानि) दशभिः

गणैः विभक्ताः सन्ति। प्रथमतया पठितस्य धातोः नाम्ना तत्तद्गणानां नामकरणम् अभवत्। अधस्तनसारण्यां दशगणान् पश्यत -

प्रथमः धातुः	गणः	प्रथमः धातुः	गणः
भू सत्तायाम्	भ्वादिः	अद् भक्षणे	अदादिः
हु दानादनयोः	जुहोत्यादिः	दिवु क्रीडाविजिगीषा......गतिषु	दिवादिः
षुञ् अभिषवे	स्वादिः	तुद व्यथने	तुदादिः
रुधिर् आवरणे	रुधादिः	तनु विस्तारे	तनादिः
डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये	क्र्यादिः	चुर स्तेये	चुरादिः

सर्वेषां धातूनां कालाद्यर्थप्रतिपादनाय दश लकाराः वर्तन्ते, ते यथा - लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् च इति। लेट् इत्यस्य प्रयोगः वेदे एव भवति।

संस्कृते क्रियापदस्य अर्थबोधकः पुरुषः त्रिविधः भवति - प्रथमपुरुषः, मध्यमपुरुषः, उत्तमपुरुषः चेति। उत्तमपुरुषस्य कर्त्ता अस्ति अस्मद् शब्द-बोध्यः(अहम्, आवाम्, वयम्), मध्यमपुरुषस्य कर्ता भवति युष्मद् शब्द-बोध्यः (त्वम्, युवाम्, यूयम्), एवं अस्मद्-युष्मद्-शब्दौ विहाय अवशिष्टाः शब्दाः प्रथमपुरुषयोग्याः भवन्ति।

संस्कृतभाषायां क्रियापदं त्रिषु अपि लिङ्गेषु समानं भवति। क्रियापदेषु लिङ्गभेदः कोऽपि नास्ति। अधः दत्तया सारण्या त्रिविधं पुरुषं तत्सम्बद्धानि वाक्यानि च अवगच्छेम।

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
मध्यमपुरुषः	त्वं पठसि	युवां पठथः	यूयं पठथ
उत्तमपुरुषः	अहं पठामि	आवां पठावः	वयं पठामः

अव्ययम्

संज्ञापदेषु अव्ययान्यपि अन्यतमानि। त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु विभक्तिषु सर्वेषु वचनेषु च एषां रूपाणि समानानि भवन्ति। यथोच्यते -

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अव्ययानि त्रिधा विभक्तानि -

सामान्य-अव्ययानि	कृदन्त-अव्ययानि	तद्धितान्त-अव्ययानि
प्रातः, पुनः, एव, एवम्, अपि, इति, अथ, किन्तु, अथवा, खलु, पृथक्, तूष्णिम्, अन्तरा, नूनम्, सार्धम्, साकम्, सुष्ठु, खलु, तथा, उभयत, विना, अद्य, श्वः, ह्यः, आहोस्वित्......	कृत्वा, आदाय, गन्तुम्, स्मारं स्मारम्	सर्वतः, एकधा, इदानीम्, अत्र, तत्र, कुत्र, क्व, यत्र,

एषु केषाञ्चन प्रयोगाः इह प्रदत्ताः सन्ति -

	अव्ययम्	**उदाहरणम्**
(क)	खलु	कृष्णः सुन्दरः खलु।
(ख)	एव	भीमः एव वीरः।
(ग)	अधः	वृक्षस्य अधः मूलं वर्तते।
(घ)	सम्यक्	अध्यापिका सम्यक् पाठयति।
(ङ)	उपरि	पर्वतस्य उपरि देवालयः अस्ति।
(च)	सकृत्	सर्वेऽपि जीवने सकृत् वेदं पठन्तु।

अभ्यासप्रश्नाः

1. संस्कृतभाषायां कति लिङ्गानि वचनानि विभक्तयः, पुरुषाश्च भवन्ति ?
2. लकाराणां संख्या कति ? तेषां नामानि लिखत ।
3. स्वादि-एकविंशति-प्रत्ययानां नामानि लिखत ।
4. संस्कृतभाषायां धातवः कतिधा विभजिताः ? के च ते ?
5. दशगणानां नामानि लिखित्वा अर्थसहितान् प्रथमान् धातून् लिखत ।
6. निम्नलिखितानि अव्ययानि योजयित्वा वाक्यानि रचयत –

   श्वः, अतः, प्रातः, पृथक्, तथा, अद्य, अपि

नवमः पाठः

संज्ञाप्रकरणम्, अच्-सन्धिप्रकरणञ्च

संज्ञाप्रकरणम्

संज्ञासंज्ञिसम्बन्धबोधकसूत्रं संज्ञासूत्रम्। सम्यक् ज्ञायते इति संज्ञा/नाम। संज्ञी अर्थात् अवयवी इति। यथा - शिष्यः इति संज्ञा, तस्य देहः संज्ञी इति। तथैव व्याकरणशास्त्रेऽपि 'वृद्धिरादैच्' इति सूत्रे वृद्धिः इति संज्ञा, आदैच् (आ, ऐ, औ) इति संज्ञी। अधः क्रमशः संज्ञासूत्राणि प्रदत्तानि -

इत्संज्ञा

उपदेशेऽजनुनासिक इत् *(पा.सू १.३.२)* -

पदविभागः - उपदेशे (सप्तम्येकवचनम्), अच् (प्रथमैकवचनम्), अनुनासिकः (प्रथमैक-वचनम्) इत् (प्रथमैकवचनम्)।

वृत्तिः - उपदेशेऽनुनासिकोऽजित्संज्ञः स्यात्। प्रतिज्ञानुनासिक्याः पाणिनीयाः।

उदाहरणम् - 'एधँ वृद्धौ' इति धातुः। अत्र धकारोत्तरवर्तिनः अनुनासिकस्य अकारस्य प्रकृतेन सूत्रेण इत्संज्ञा भवति। तथैव 'गम्लृँ गतौ' इत्यत्र उपदेशे ऌकारस्य, 'हसेँ हसने' इत्यत्र एकारस्य तथा 'टुओँश्वि गतिवृद्ध्योः' इत्यत्र ओकारस्य इत्संज्ञा।

हलन्त्यम् *(पा.सू १.३.३)* -

पदविभागः - हल् (प्रथमैकवचनान्तम्) अन्त्यम् (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - उपदेशेऽन्त्यं हलित् स्यात्। उपदेश आद्योच्चारणम्। सूत्रेष्वदृष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र। पाणिनिः, कात्यायनः, पतञ्जलिः इति **त्रयः मुनयः** यान् शब्दान् आदौ उच्चारितवन्तः स शब्दः उपदेशपदेन ज्ञायते।

उदाहरणम् - अण्, इक्, अच्, यण्, सुप्, तिङ्, सुट्, तातङ्, डुकृञ्, शीङ् इति। एतेषु अन्तिमस्य हल्-वर्णस्य इत्संज्ञा भवति।

प्रत्याहारसंज्ञा

आदिरन्त्येन सहेता (१.१.७१)

पदविभागः - आदिः (प्रथमा-एकवचनम्), अन्त्येन (तृतीया-एकवचनम्), सह (अव्ययम्), इता (तृतीया-एकवचनम्)

वृत्तिः - अन्त्येनेता सहिता आदिर्मध्यगानां स्वस्य च संज्ञा स्यात्।

उदाहरणम् - अण् इति अइउवर्णानां संज्ञा। एवम् अच्, हल्, अल् इत्यादयः।

ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञा

ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (*पा.सू.* १.२.२७)

पदविभागः - ऊकालः (प्रथमा-एकवचनम्), अच् (प्रथमा-एकवचनम्), ह्रस्वदीर्घप्लुतः (प्रथमा-एकवचनम्)

वृत्तिः - उश्च ऊश्च ऊ३श्च वः, वां काल इव कालो यस्य सोऽच् क्रमाद् ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञः स्यात्। स प्रत्येकम् उदात्तादिभेदेन त्रिधा।

सवर्णसंज्ञा

तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् (*पा.सू. १.१.९*) -

पदविभागः - तुल्यास्यप्रयत्नम् (प्रथमैकवचनम्), सवर्णम् (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद् द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यात्। 'ऋलृवर्णयोर्मिथः सवर्णं स्यात्'

संयोगसंज्ञा

हलोऽनन्तराः संयोगः (*पा.सू. १.१.७*) -

पदविभागः - हलः (प्रथमाबहुवचनम्), अनन्तराः (प्रथमाबहुवचनम्), संयोगः (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसंज्ञाः स्युः।

उदाहरणम् - सन्धिः, शिष्यः, छात्रः इति।

संहितासंज्ञा

परः सन्निकर्षः संहिता (*पा.सू. १.१.१०९*) -

पदविभागः - परः (प्रथमैकवचनम्) सन्निकर्षः (प्रथमैकवचनम्) संहिता (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।

सुप्तिङन्तं पदम् (*पा.सू. १.४.१४*)

पदविभागः - सुप्तिङन्तम् (प्रथमैकवचनम्), पदम् (प्रथमैकवचनम्)।

वृत्तिः - सुबन्तं तिङन्तं च पदसंज्ञं स्यात्।

उदाहरणम् - सुबन्तम् - रामः, रमा, रामात्, नदीम्। तिङन्तम् - पठति, अखादत्, लिखतु इति।

गुणसंज्ञा

अदेङ् गुणः *(पा.सू. १.१.२)* -

पदविभागः - अदेङ् (प्रथमैकवचनम्) गुणः (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात्।

उदाहरणम् - अ, ए, ओ एतेषां गुणसंज्ञा भवति।

वृद्धिसंज्ञा

वृद्धिरादैच् *(पा.सू. १.१.१)* -

पदविभागः - वृद्धिः (प्रथमैकवचनम्), आदैच् (प्रथमैकवचनम्)

वृत्तिः - आदैच्च वृद्धिसंज्ञः स्यात्।

उदाहरणम् - आ, ऐ, औ एतेषां वृद्धिसंज्ञा भवति।

अच्-सन्धिः

वर्णानाम् अतिशयितः सन्निधिः 'सन्धिः' इति उच्यते। यदा वर्णाः परस्परं मिलित्वा तिष्ठन्ति तदा तेषु कदाचित् अच्-हलोः सन्निधौ विकारो भवति तदा सन्धिः इति उच्यते। विकारो नाम कस्यचित् अन्यवर्णस्य प्रयोगो वा। यथा- यदि (द् + इ) + अपि = यद्यपि (यद् + य् + अपि) अत्र इकारस्य स्थाने यकारादेशः अभवत्, अतः यकारः एव विकारः।

सन्धिः मुख्यरूपेण त्रिविधो भवति। यथा- अच्-सन्धिः, हल्-सन्धिः, विसर्ग-सन्धिश्चेति। यदा सन्धिः भवति तदा तत्र आदेशः, आगमः, लोपः, प्रकृतिभावो वा भवति।

आदेशः - आदेशः शत्रुवद् भवति। यस्य स्थाने आदेशः भवति तदुन्मूल्य स आदेशः तत्र तिष्ठति। **यथा** - दध्योदनम्। दधि + ओदनम् (इ = य्)।

आगमः - आगमः मित्रवद् भवति। यस्य स्थाने आगमो भवति तस्य वर्णस्य पार्श्वे उपविशति। **यथा** - कुर्वन्नपि - कुर्वन् + अपि = कुर्वन् न् + अपि।

लोपः - अत्र वर्णस्यादर्शनम् अर्थात् लोपो भवति। यथा - एष विष्णुः - एषस् + विष्णुः (स् = लोपः)

अच्-वर्णात् अच्-वर्णे परे यदा आदेशादिः भवति तदा सः अच्-सन्धिः इति उच्यते।

यण्-सन्धिः

इको यणचि *(पा.सू. ६.१.७७)* -

पदविभागः - इकः (षष्ठ्येकवचनम्), यण् (प्रथमैकवचनम्), अचि (सप्तम्येकवचनम्)

वृत्तिः - इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये।

इक् प्रत्याहारे चत्वारः वर्णाः भवन्ति - इ उ ऋ ऌ इति।

यण् प्रत्याहारे अपि चत्वारः वर्णाः भवन्ति - य व र ल इति।

स्थानी	इ, ई	उ, ऊ	ऋ	ऌ
आदेशः	य्	व्	र्	ल्

उदाहरणानि -

सरस्वती + अत्र	=	सरस्वत् + य् + अत्र	=	सरस्वत्यत्र
शिशु + अशनम्	=	शिश् + व् + अशनम्	=	शिश्वशनम्
मातृ + इच्छा	=	मात् + र् + इच्छा	=	मात्रिच्छा
ऌ + आकृतिः	=	ल् + आकृतिः	=	लाकृतिः

अयादिसन्धिः

एचोऽयवायावः *(पा.सू. ६.१.७८)* -

पदविभागः - एचः (षष्ठ्येकवचनम्), अयवायावः (प्रथमाबहुवचनम्) इति ।

वृत्तिः - एचः क्रमादय् अव् आय् आव् एते स्युरचि।

उदाहरणानि -

एकारस्य स्थाने अय् आदेशः	-	ए - अय्
ओकारस्य स्थाने अव् आदेशः	-	ओ - अव्
ऐकारस्य स्थाने आय् आदेशः	-	ऐ - आय्
औकारस्य स्थाने आव् आदेशः	-	औ - आव्

यथा-

हरये	पवनम्	गायकः	भावकः
हरे + ए	पो + अनम्	गै + अकः	भौ + अकः
हर् + अय् + ए	प् + अव् + अनम्	ग् + आय् + अकः	भ् + आव् + अक
हरये	पवनम्	गायकः	भावकः

गुणसन्धिः

आद्गुणः *(पा.सू. ६.१.८७)* -

पदविभागः - आत् (पञ्चम्येकवचनम्), गुणः (प्रथमैकवचनम्)।

वृत्तिः - अवर्णादचि परे पूर्वपरयोरेको गुण आदेशः स्यात्। उपेन्द्रः। गङ्गोदकम्।

स्थानी	अ/आ + इ/ई	अ/आ + उ/ऊ	अ/आ + ऋ/ ॠ	अ/आ + ऌ
आदेशः	ए	ओ	अर्	अल्

उदाहरणानि -

उप + इत्य	=	उपेत्य (अ + इ = ए)
महा + ईशः	=	महेशः (आ + ई = ए)
अप + ईक्षा	=	अपेक्षा (अ + ई = ए)
सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः (अ + उ = ओ)
महा + उत्सवः	=	महोत्सवः (आ + उ = ओ)
शिष्य + ऊर्जा	=	शिष्योर्जा (अ + ऊ = ओ)
शिष्य + ऋद्धिः	=	शिष्यर्द्धिः (अ + ऋ = अर्)
महा + ऋषिः	=	महर्षिः (आ + ऋ = अर्)
तव + ऌकारः	=	तवल्कारः (अ + ऌ = अल्)

वृद्धिसन्धिः

वृद्धिरेचि *(पा.सू. ६.१.८८)* -

पदविभागः - वृद्धिः (प्रथमैकवचनम्), एचि (सप्तम्येकवचनम्)।

वृत्तिः - आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्। गुणापवादः। कृष्णैकत्वम्। गङ्गौघः। देवैश्वर्यम्। कृष्णौत्कण्ठ्यम्।

स्थानी	अ/आ + ए/ऐ	अ/आ + ओ/औ
आदेशः	ऐ	औ

उदाहरणानि -

अथ + एतत्	=	अथैतत् (अ + ए = ऐ)
सीता + एषा	=	सीतैषा (आ + ए = ऐ)
न + ऐच्छत्	=	नैच्छत् (अ + ऐ = ऐ)
जल + ओघः	=	जलौघः (अ + ओ = औ)
महा + ओजः	=	महौजः (आ + ओ = औ)
शिष्य + औषधम्	=	शिष्यौषधम् (अ + औ = औ)

सवर्णदीर्घसन्धिः

अकः सवर्णे दीर्घः *(पा.सू. ६.१.१०१)* -

पदविभागः - अकः (पञ्चम्येकवचनम्), सवर्णे (सप्तम्येकवचनम्), दीर्घः (प्रथमैकवचनम्)।

वृत्तिः - अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात्। दैत्यारिः। श्रीशः। विष्णूदयः।

होतृकारः।

स्थानी	अ/आ + अ/आ	इ/ई + इ/ई	उ/ऊ + उ/ऊ	ऋ/ऌ + ऋ/ऌ
आदेशः	आ	ई	ऊ	ॠ

उदाहरणानि -

वेद + अभ्यासः	=	वेदाभ्यासः (अ + अ = आ)
विद्या + आलयः	=	विद्यालयः (आ + आ = आ)
जल + आशयः	=	जलाशयः (अ + आ = आ)
दधि + इदम्	=	दधीदम् (इ + इ = ई)
महर्षि + ईशः	=	महर्षीशः (इ + ई = ई)
सरस्वती + इयम्	=	सरस्वतीयम् (ई + इ = ई)
गुरु + उपदेशः	=	गुरूपदेशः (उ + उ = ऊ)
वधू + उपवर्हः	=	वधूपवर्हः (ऊ + उ = ऊ)
लघु + ऊहः	=	लघूहः (उ + ऊ = ऊ)
मातृ + ऋणम्	=	मातृणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
होतृ + ऌकारः	=	होतृकारः (ऋ + ऌ = ॠ)

अभ्यासप्रश्ना:

1. सवर्ण-संयोग-गुण-वृद्धि-संहितासंज्ञानां सूत्राणि लिखत ।
2. किं नाम सन्धि: तथा च सन्धय: कतिविध: ? तेषां नामानि लिखत ।
3. यण्-अयादि-गुणसन्धे: सूत्राणि लिखित्वा सोदाहरणं विवेचयत ।
4. निम्नलिखितानां शब्दानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धे: नाम लिखत –

   प्रत्येकम्, कार्यालय:, सैव, सूर्योदय:, महर्षि:

दशमः पाठः

वेदानां परिचयः

ज्ञानार्थकात् विद् धातोः घञ्-प्रत्यये कृते वेदशब्दः निष्पन्नः भवति, वेदशब्दः ज्ञानराशेः बोधको भवति। संस्कृतव्याकरणदृष्ट्या वेदशब्दस्य निष्पत्तिः चतुर्भ्यः धातुभ्यः दर्शयितुं शक्यते -

सत्तायां विद्यते, ज्ञाने वेत्ति, विन्ते विचारणे ।

विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात् ॥

- विदँ सत्तायाम् (दिवादिगणे)। विदँ ज्ञाने (अदादिगणे)
- विदँ विचारणे (रुधादिगणे)। विद्लृँ लाभे (तुदादिगणे)

अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। "इष्टप्राप्ति-अनिष्टपरिहारयोः अलौकिकम् उपायं यः ग्रन्थः वेदयति स वेदः" इति आचार्यसायणः। चत्वारः वेदाः - ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च ।

ऋग्वेदः - "ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्" यस्मिन् वेदे विविधदेवानां छन्दोबद्धैः मन्त्रैः स्तवनं भवति सः ऋग्वेदः कथ्यते। पतञ्जलिमतानुसारम् 'एकविंशतिधा वाह्वृच्यम्' अर्थात् ऋग्वेदस्य एकविंशति शाखाः भवन्ति, परन्तु अधुना ऋग्वेदस्य पञ्चशाखाः एव उपलभ्यन्ते। ताः यथा - (१) शाकलशाखा (२) वाष्कलशाखा (३) आश्वलायनशाखा (४) शाङ्खायनशाखा (५) माण्डुकायनशाखा च। एतासु शाखासु सस्वरपरम्परायां पूर्णरूपेण केवलं शाकलशाखा एव उपलभ्यते। अस्यां शाखायां मण्डलक्रमानुसारं दशसु मण्डलेषु ऋग्वेदस्य विभागः कृतोऽस्ति। अत्र १०२८ सूक्तानि, १०५८०.२५ ऋचश्च उपलभ्यन्ते। अष्टक-क्रमानुसारम् अस्मिन् वेदे अष्टौ (८) अष्टकानि सन्ति । एकस्मिन् अष्टके अष्ट प्रपाठकाः भवन्ति, ८ × ८ = ६४, ६४ अध्यायाः, २००६ वर्गाश्च, १०५८०.२५ (१०५५२) ऋचश्च उपलभ्यन्ते। ऋग्वेदस्य ऋत्विक् होता, मुख्याचार्यः पैलः, देवता अग्निः चास्ति।

यजुर्वेदः - यजूंषि गद्यानि। चतसृषु वैदिकसंहितासु यजुर्वेदसंहितायाः महत्त्वपूर्णं स्थानं विद्यते। अस्यां संहितायां सर्वविधानां यागादिकानां वर्णनमुपलभ्यते। महाभाष्ये एकशत-मध्वर्युशाखाः इति विवरणं प्राप्यते, किन्तु संप्रति अस्याः संहितायाः भेदद्वयं विद्यते (१) शुक्लयजुर्वेदसंहिता (२) कृष्णयजुर्वेदसंहिता च। शुक्लयजुर्वेदसंहितायां मन्त्राणां छन्दातिरिक्तानां प्रधानतया सन्निवेशः विद्यते। शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिन-काण्वभेदेन द्वे शाखे वर्तेते। कृष्णयजुर्वेदस्य तैत्तिरीयशाखा, मैत्रायणीशाखा, कठशाखा, कपिष्ठलशाखा च इदानीं सम्प्राप्यन्ते। यजुर्वेद-संहितासु सर्वत्र यज्ञोपयोगिमन्त्राणां सङ्ग्रहो वर्तते। यत्र मन्त्रे अक्षराणां संख्या सुनिश्चिता न भवति स वेदमन्त्रः यजुश्शब्देन ज्ञायते। यथोक्तम् - '**अनियताक्षरावसानो यजुः**' "**गद्यात्मको यजुः**"। शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिन-शाखायां ४० अध्यायाः,

३०३ अनुवाकाः, १९७५ मन्त्राः सन्ति। काण्वशाखायां ४० अध्यायाः, ३२८ अनुवाकाः, २०८६ मन्त्राः (कण्डिकाश्च) प्राप्यन्ते। अस्य वेदस्य ऋत्विक् अध्वर्युः, मुख्यदेवता वायुः, आचार्यः वैशम्पायनः च अस्ति। अस्याः माध्यन्दिनसंहितायाः चत्वारिंशत्तमः अध्यायः 'ईशावास्योपनिषद्' इति नाम्ना प्रसिद्धो वर्तते।

सामवेद-संहिता - साम इत्यत्र 'सा' शब्देन ऋक् परामृश्यते। 'अम्' शब्देन गान्धारादयः सप्तस्वराः अभिज्ञायन्ते। सामवेदसंहितायां भागद्वयं वर्तते पूर्वार्चिकं उत्तरार्चिकं चेति। पूर्वार्चिकस्य एव छन्दः, छन्दसी, छन्दसिका चेति त्रीणि नामानि सन्ति। विषयानुसारेण पूर्वार्चिकं चतुर्षु भागेषु विभक्तम्। (१) आग्नेयपर्व (२) ऐन्द्रपर्व (३) पवमानपर्व (४) आरण्यपर्व च। उत्तरार्चिकं तु विशेषतः अनुष्ठान-निर्देशकम्, तत्र दशरात्रमित्यादयो बहवो विभागाः सन्ति। अस्यां संहितायां १८७५ मन्त्राः उपलभ्यन्ते। एतेषु केवलं ७५ मन्त्राः ऋग्वेदसंहितायां न प्राप्यन्ते। महर्षिपतञ्जलिः महाभाष्ये सहस्रवर्त्मा सामवेद इति उल्लिखितवान्। सम्प्रति सामवेदस्य तिस्रः एव शाखाः समुपलभ्यन्ते (१) कौथुमीयशाखा (२) राणायनीयशाखा (३) जैमिनीयशाखा चेति। कौथुमीयशाखायां ६५० मन्त्राः पूर्वार्चिके, १२२५ मन्त्राश्च उत्तरार्चिके प्राप्यन्ते। आहत्य सामवेदस्य कौथुमीयशाखायां १८७५ मन्त्राः सन्ति। एतेषु ऋग्वेदीयाः १५०४ मन्त्राः विद्यन्ते। अस्य वेदस्य ऋत्विक् उद्गाता, आचार्यः जैमिनिः, देवता आदित्यः इति। सामगानभेदाः - प्रस्तावः, उद्गीथः, प्रतिहारः, उपद्रवः, निधनश्चेति पञ्च सन्ति। सामविकाराः - विकारः, विश्लेषणः, विकर्षणः, अभ्यासः, विरामः, स्तोभश्च इति षड् भेदाः समुपलभ्यन्ते।

सप्तस्वराः त्रयो ग्रामाः, मूर्धनास्त्वेकविंशतिः।

ताना एकोनपञ्चाशत्, इत्येतत् स्वरमण्डलम्॥

अथर्ववेद-संहिता - अथर्ववेदसंहितायाः पर्यायनामानि ब्रह्मवेदः, अङ्गिरावेदः, भैषज्यवेदः, अथर्वाङ्गिरोवेदः इत्यादयः सन्ति। थुर्वीँ कौटिल्यार्थकः तथा हिंसार्थक-धातोः थर्वशब्दस्य निष्पत्तिः भवति। नञ्समासादिकं कृत्वा हिंसारहितः तथा कुटिलतारहितः इति अथर्व शब्दस्यार्थः। अथर्वाङ्गिरस-नामकाभ्यां द्वाभ्याम् ऋषिभ्यां दृष्टानाम् ऋचः समुहः एव अथर्ववेदः। अथर्वदृष्टाः मन्त्राः शान्ति-पुष्टि-कर्मयुक्ताः, आङ्गिरसदृष्टाः ऋचः अभिचारिकाः सन्ति।

अथर्ववेदे २० काण्डानि, ३६ प्रपाठकाः, १११ अनुवाकाः, ७३१ सूक्तानि सन्ति। आहत्य ५९७७ मन्त्राः वर्तन्ते। अस्यां संहितायां राष्ट्राभिवर्धनसूक्तस्य, पृथिवीसूक्तस्य, कालसूक्तस्य च विशेषस्थानमस्ति। अथर्ववेदस्य ऋत्विक् ब्रह्मा, आचार्यः सुमन्तुः, ऋषि अथर्वा, देवता सोमः च विद्यते।

वैदिकवाङ्मयम् -

ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः इति चत्वारो वेदाः, प्रत्येकं वेदस्य ब्राह्मणम्, आरण्यकम्, उपनिषदादियुक्तः वेदः वैदिकवाङ्मयम् इति शब्देन ज्ञायते। ते यथा -

वेदाः	आचार्याः	देवताः	ऋत्विजः	उपवेदाः
ऋग्वेदः	पैलः	अग्निः	होता	आयुर्वेदः
यजुर्वेदः	वैशम्पायः	वायुः	अध्वर्युः	धनुर्वेदः
सामवेदः	जैमिनिः	आदित्यः	उद्गाता	गान्धर्वेदः
अथर्ववेदः	सुमन्तुः	सोमः	ब्रह्मा	स्थापत्यवेदादिः

वेदः	शाखा	ब्राह्मणम्	आरण्यकम्	उपनिषद्	शिक्षाग्रन्थः
ऋग्वेदः	आश्वालयनः शाङ्खायनः माण्डूकायनः शाकलः बाष्कलः	ऐतरेयः कौशीतकिः / शाङ्खायनः	ऐतरेयः कौशीतकिः / शाङ्खायनः	ऐतरेयः, कौशीतकिः / शाङ्खायनः बाष्कलः	पाणिनीयशिक्षा स्वराङ्कुशा षोडशश्लोकी शैशिरीय आपिशलिशिक्षा
यजुर्वेदः	माध्यन्दिनी वाजसनेयी	शतपथब्राह्मणम् तैत्तिरीयम् मैत्रायणी कठब्राह्मणम् कपिष्ठलब्राह्मणम्	बृहदारण्यकम् तैत्तिरीयम् मैत्रायणी	ईशावास्यम् बृहदराण्यकम् तैत्तिरीयम् मैत्रायणी श्वेताश्वतरम् कठोपनिषद्	याज्ञवल्क्यशिक्षा वासिष्ठी शिक्षा
सामवेदः	कौथुमीयम् राणायणीयम् जैमिनीयम्	प्रौढः, वंशः,षड्विंशः आर्षेयः, छान्दोग्यः सामविधानम् देवताध्यायः जैमिनीयः, संहितोपनिषद्	तवल्कारः जैमिनीयम् छान्दोग्यम्	छान्दोग्योपनिषद् केनोपनिषद्	नारदीयशिक्षा गौतमीशिक्षा लोमशीशिक्षा

अथर्ववेदः	शौनकः पैप्पलाद्	गोपथब्राह्मणम्	नास्ति	प्रश्नोपनिषद् मुण्डकोपनिषद् माण्डूक्योपनिषद्	माण्डूकी शिक्षा

वेदः	श्रौतसूत्रम्	गृह्यसूत्रम्	धर्मसूत्रम्	शूल्बसूत्रम्
ऋग्वेदः	शाङ्खायनम् आश्वलायनम्	आश्वलायनम् शाङ्खायनम् (कौषितकिः)	वासिष्ठम्	नास्ति
यजुर्वेदः	कात्यायनम् बौधायनम् भारद्वाजम् बाधुलम् मानवम् आपस्तम्बम् काठकम् सत्याषाढम् वैखानसम् वाराहम्	पारस्करम् बौधायनम् भारद्वाजम् मानवम् आपस्तम्बम् काठकम् अग्निवेश्यम् हिरण्यकेशीय वैखानसम् वाराहम्	बौधायनम् वैखानसम् आपस्तम्बम् विष्णुः	कात्यायनम् बौधायनम् आपस्तम्बः बाधूलः
सामवेदः	आर्षेयम् कल्पम्/मशकम् लाट्यायनम् द्राह्यायणम् जैमिनीयम्	गोभिलम् खादिरम् द्राह्यायणम् जैमिनीयम् कौथुमम्	गौतमधर्मसूत्रम्	नास्ति
अथर्ववेदः	वैतानश्रौतसूत्रम्	कौशिकगृह्यसूत्रम्	नास्ति	नास्ति

अभ्यासप्रश्नाः

1. सम्प्रति चतुर्वेदानाम् उपलभ्यमानाः शाखाः कति सन्ति ? तेषां नामानि लिखत ।

2. ऋग्वेदे कति मण्डलानि, सूक्तानि, अष्टकानि, ऋचश्च समुपलभ्यन्ते ?

3. चतुर्वेदानाम् उपवेदाः - ऋत्विजः - आचार्याश्च के के भवन्ति ?

4. यजुर्वेदस्य माध्यन्दिनशाखायां कति अध्यायाः, अनुवाकाः, मन्त्राश्च सन्ति ?

5. सामवेदस्य पूर्वार्चिके उत्तरार्चिके च आहत्य कति मन्त्राः विद्यन्ते ?

6. सामगानस्य सामविकारस्य च कति भेदाः समुपलभ्यन्ते ?

7. अथर्ववेदे कति काण्डानि, अनुवाकाः, सूक्तानि, मन्त्राश्च वर्तन्ते ?

एकादशः पाठः

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

सर्वेषां मानवानां जीवने स्वाध्यायस्य, अध्ययनस्य, ज्ञानस्य वा उत्कृष्टं स्थानं वर्त्तते। यथा हि जठरे बुभुक्षां शमयितुम् अन्नमपेक्ष्यते तथा ज्ञानस्य बुभुक्षां शमयितुं स्वाध्यायस्य आवश्यकता भवति। अतः स्वाध्यायः अवश्यमेव कर्त्तव्यः। **"स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते"** इति श्रीमद्भगवद्गीतायां भगवान् श्रीकृष्णः स्वाध्यायं तपरूपेण प्रत्यपादयत्।

"स्वाध्यायः यथाविधि ऋगाद्यभ्यासः यज्ञः येषां ते स्वाध्याययज्ञाः। ज्ञानयज्ञाः ज्ञानं शास्त्रार्थपरिज्ञानं यज्ञः येषां ते ज्ञानयज्ञाश्च" इति श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाः गीताभाष्ये कथितम्। एवं च प्रत्येकं जनस्य वंशपरम्परातः प्राप्तायाः वेदशाखायाः गुरुमुखोच्चारणानूच्चारण-पूर्वकम् अध्ययनं विधेयम् इति तात्पर्यार्थः अस्ति 'स्वाध्यायोऽध्येतव्य' इत्यस्य। नित्यं स्वाध्यायेन एव सस्वरो वेदः सिद्धिं गच्छति, जिह्वाग्रे च तिष्ठतीति याज्ञवल्क्यस्य महर्षेः वाक्यम्। तदुक्तम्-

गुणिता शतशो विद्या सहस्राऽऽवर्तिता पुनः।
आगच्छत्येव जिह्वाग्रं स्थलान्निम्नमिवोदकम् ॥

आधुनिकदृष्ट्या स्वाध्यायः सद्गुणानां विकासस्य साधनं भवति। मानवानां बुद्धेः, कौशलानां च विकासाय ज्ञानप्रदानां, कौशलप्रदानां, नीतिबोधकानां च ग्रन्थानां सम्यक् अध्ययनेन दुर्गुणानां नाशः सद्गुणानां च विकासो भवति।

स्वाध्यायेनैव वेदशाखानां दुर्लभानां शास्त्राणां च संरक्षणं सहस्रशः वर्षाणि कृतमस्ति, करिष्यते च। यस्मिन् दिने ब्राह्मणः स्वाध्यायं नाचरति तस्मिन् क्षणे सः ब्राह्मण्यात् हीयते इति स्वाध्यायमहत्त्वं प्रदिपादितमस्ति।

बृहदारण्यकोपनिषदि "अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् एतत् यत् ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्वाङ्गिरसः, इतिहासः, पुराणविद्या, उपनिषदः, श्लोकाः, सूत्राणि, अनुव्याख्यानानि, व्याख्यानानि, अस्यैव एतानि, सर्वाणि निःश्वसितानि" इति विद्याः वर्णिताः सन्ति। इत्थमेव -

पुराण-न्याय-मीमांसा-धर्मशास्त्राङ्ग-विस्तराः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश॥

इत्युक्ताः सर्वाः विद्याः, भारतदेशे गुरुकुलेषु अध्याप्याः कलाः च गुरुमुखोच्चारणानूच्चारण-पूर्वकेण अध्ययनेन स्वाध्यायेन एव संरक्षिताः सन्ति।

अतः नित्यं स्वाध्यायः कर्त्तव्यः, अध्ययनं करणीयम्। विद्यार्थिनः स्वाध्याय एव तपः, श्रेयस्साधनम्, तदेव लोकोत्तारकं सत् महदुपकारकं ज्ञानसंरक्षणे। अत एव उक्तं शास्त्रेषु - **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'** इति।

अभ्यासप्रश्नाः

1. स्वाध्यायस्य महत्त्वविषये पञ्चवाक्यानि संस्कृतगिरया लिखत ।
2. त्रयो धर्मस्कन्धाः के ?
3. आधुनिकदृष्ट्या स्वाध्यायः कस्य साधनं भवति ?
4. वंशपरम्परातः प्राप्तायाः वेदशाखाया अध्ययनं कथं विधेयम् ?
5. वेदादिशास्त्राणां संरक्षणं केन भवति ?

द्वादशः पाठः

सम्भाषणम्

किम् | कुत्र | कति | कदा | कुतः | कथम् | किमर्थम्

छात्रः - हरिः ओम् ! सुप्रभातम् ! अमुक .... गोत्रः अमुक .... प्रवरान्वितः (शुक्लयजुर्वेदमाध्यान्दिनशाखाध्यायी) (आश्वलायन) सूत्रान्वितः (अर्जुनशर्मा) अहं भोः! अभिवादये।

गुरुः - आयुष्मान् भव। स्वस्ति अस्तु ते। स्वागतम्, आगच्छतु, उपविशतु। सर्वं कुशलं वा?

छात्रः - आम्, सर्वं कुशलम् अस्ति। भोः गुरो! भवान् अत्र कं विषयं पाठयति ?

गुरुः - वत्स ! अहं वेदं संस्कृतभाषां पाठयामि।

छात्रः - भवान् कुत्र पाठयति?

गुरुः - अहं वेदपाठशालायां पाठयामि।

छात्रः - श्रीमन् ! तत्र कति छात्राः पठन्ति?

गुरुः - हे बालक ! तत्र पञ्चपञ्चाशत् बालकाः पञ्चविंशतिः बालिकाश्च पठन्ति।

छात्रः - भवान् कदा पाठशालां गच्छति?

गुरुः - अहं प्रातः सप्तवादने पाठशालां गच्छामि। वत्स ! त्वम् अधुना कुतः आगच्छसि?

छात्रः - श्रीमन् ! अहं गृहात् आगच्छामि।

गुरुः - तव गृहे सर्वे कथं सन्ति?

छात्रः - श्रीमन् ! सर्वे कुशलिनः वर्तन्ते।

गुरुः - हे बालक ! त्वम् अद्य इह किमर्थम् आगतवान्?

छात्रः - गुरुवर्य ! श्वः वेदस्य शलाकापरीक्षा वर्त्तते, अतः वेदस्य पुस्तकं स्वीकर्तुम् आगतवान्।

गुरुः - अस्तु, स्वीकरोतु। वेदपुस्तकं कथम् अस्ति ?

छात्रः - वेदपुस्तकं शुद्धाक्षरैः मुद्रितं समीचीनं च अस्ति। अस्तु महोदय ! अहं परीक्षार्थं त्वरया गच्छामि। पुनर्मिलावः। धन्यवादः श्रीमन् !।

अभ्यासप्रश्ना:

1. निम्नलिखितान् सप्त ककारान् आश्रित्य त्रीणि – त्रीणि वाक्यानि रचयत –
   किम्, कुत्र, कति, कदा, कुतः, कथम्, किमर्थम्
2. सप्त ककाराणामर्था: हिन्दीभाषया लिखत ।

त्रयोदशः पाठः

महर्षिः वेदव्यासः

ऋषिपरम्परायां महर्षिः वेदव्यासः सुप्रसिद्धः वर्त्तते। वेदानां विभागकारणात् कृष्णद्वैपायनः वेदव्यासः अभवत्। द्वीपे अस्य जन्म अभवत् इति द्वैपायनः, वर्णेन कृष्णः अतः कृष्णद्वैपायनः (कृष्णश्चासौ द्वैपायनश्च) इत्यपि अस्य नाम। बदरीवने एषः आसीत् इति कारणेन बादरायणः (बदरी अयनम् अस्य) इति नाम्ना ख्यातः अभूत्। एतस्य पिता पराशरमुनिः, माता च सत्यवती। अलौकिकप्रतिभायाः कारणात् वसिष्ठगोत्रोद्भवं वेदव्यासं भगवतः विष्णोः अवतारं त्रिकालज्ञश्च कथ्यन्ते विद्वद्भिः। महर्षेः वेदव्यासस्य जन्म आषाढपूर्णिमायां तिथौ अभवत्, अतः आषाढमासे व्यासपूर्णिमायाः (गुरुपूर्णिमायाः) उत्सवः लोके प्रसिद्धः।

व्यासस्य महाभारतं कवीनाम् उपजीव्यं महाकाव्यम् अस्ति। महाभारते स्वयं वेदव्यास एव महाभारतस्य गुणगानं कृत्वा आह - **"यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्"**।

महर्षिः वेदव्यासः वेदान् चतुर्धा विभज्य स्वस्य चतुर्भ्यः पैल-वैशम्पायन-जैमिनि-सुमन्तुनामभ्यः यथाक्रमं **ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद-अथर्ववेदान्** अयच्छत्, परम्परया वेदरक्षार्थं च तान् समादिशत्।

उपनिषदां तात्पर्यरूपं ब्रह्मज्ञानं बोधयितुं बदरीक्षेत्रे निवासं कृत्वा ब्रह्मसूत्राणि रचितवान्। तानि सूत्राणि बादरायणसूत्राणि इति नाम्ना प्रसिद्धानि। त्रिकालज्ञः महर्षिः अष्टादशपुराणानां रचनाम् अकरोत्।

कृष्णद्वैपायनो मुनिः त्रिभिर्वर्षैः स्वस्य तपोबलेन जातानां कौरवपाण्डवानाम् अन्यैः उपाख्यानैः शोभितं महाभारतं रचयामास।

वेदव्यासः महाभारतं पुत्रं शुकदेवम्, शिष्यं वैशम्पायनं च बोधितवान्। वैशम्पायनः जनमेजयं प्रति तं महाभारतम् अन्ववदत्। जनमेजयः यां संहितां प्रोक्तवान् सा संहिता सम्प्रति महाभारतम् इति नाम्ना प्रसिद्धा वर्त्तते। महाभारतं कुरुवंशस्य पाण्डुवंशस्य च इतिहासम्, नाना राज्ञां वंशादिकम्, भीष्मोपदेशे राजनीतेः सूक्ष्मताम्, दर्शनरहस्यम्, भगवद्गीतारहस्यम्, भारतीयसंस्कृतेः परम्परायाश्च विविधानि मुखानि च प्रकाशयति।

अभ्यासप्रश्नाः

1. महर्षि: वेदव्यासस्यापरं नाम कृष्णद्वैपायन: किमर्थमभूत ?
2. वेदव्यासस्य माता-पित्रो: नामनि लिखत ।
3. वेदव्यासस्य जन्म कदा अभवत् तथा च स: दिवस: लोके किमर्थं प्रसिद्ध: ?

4. वेदानां विभाजनम् महाभारतस्य रचनाम् तथा च अष्टादशपुराणानां रचनाम् क अकरोत् ?

5. महाभारते कति श्लोकाः सन्ति तथा च कति वर्षे वेदव्यासः महाभारतं रचयामास?

6. वेदव्यासः महाभारतं कं-कं बोधितवान् ?

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

चतुर्दशः पाठः

महर्षिः वाल्मीकिः

संस्कृतसाहित्यजगति आदिकाव्यं रामायणं तथा तस्य रचयिता महर्षिः वाल्मीकिः आदिकविः इति नाम्ना जगति प्रसिद्धः वर्तते। वाल्मीकेः पूर्वनाम रत्नाकरः इति किंवदन्तिं बभूव। रत्नाकरः यदा शिशुः आसीत् तदा एव तस्य मातापितरौ दिवङ्गतौ। अतः स्वस्य वंशपरिचयम् अजानन् बालः रत्नाकरः व्याधैः सह संवर्धितः बभूव। वने मृगान् मारयित्वा खादनम्, वनम् आगतान् जनान् संपीड्य तेषां धन-वस्त्रदीनाम् अपहरणं च एतस्य कार्यम् आसीत्।

एकदा तेन मार्गेण नारदः, सप्तर्षयः च गच्छन्ति स्म। तदा रत्नाकरः तान् ऋषीन् पीडयितुम् उदयुङ्क्त। ते महर्षयः दिव्यचक्षुषा तस्य जन्म वृत्तान्तं दृष्ट्वा अकथयन्। त्वं महर्षेः प्रचेतसः पुत्रः मुनिकुमारः वर्तसे। किमर्थं वने व्याधैः सह वसन् त्वं व्याधः अभवः। अतः व्याधवृत्तिं त्यक्त्वा सन्मार्गे जीवनयापनं कुरु। ऋषीणाम् उपदेशं श्रुत्वा रत्नाकरस्य मनः सन्मार्गे प्रवृत्तम्। तदा नारदः तस्मै रत्नाकराय राममन्त्रस्य उपदेशम् अददत्। ऋषीणाम् आदेशानुसारं रत्नाकरः वने उपविश्य "राम राम राम" इति नामजपम् अकरोत्। रत्नाकरः बहुकालं यावत् अत्यन्तं कठिनं तपः आचरत्।

क्रमेण तस्य शरीरस्य उपरि वल्मीकः उत्पन्नः अभूत्। कदाचित् तेन मार्गेण आगच्छन् नारदः कुतश्चित् रामनामजपम् अशृणोत्। सः ध्वनिः वल्मीकात् आगच्छति इति सः दिव्यचक्षुषा ज्ञातवान्। नारदः पूर्वं रत्नाकराय दत्तं राममन्त्रोपदेशम् अस्मरत्। रत्नाकरः एव अत्र तपः आचरति इति ज्ञात्वा सः तम् उद्दिश्य - वत्स!, उत्तिष्ठ। त्वम् इदानीं पुण्यवान् असि। तपसः कारणात् त्वम् अधुना निर्दोषः असि। वल्मीकात् बहिः आगच्छ इति अवदत्। तदा रत्नाकरः वल्मीकं भित्त्वा बहिः आगच्छत्। अतः तस्य नाम वाल्मीकिः इति प्रसिद्धम् अभूत्। तदनन्तरं महर्षिः वाल्मीकिः तमसा नद्याः तीरे आश्रमे निवासं कृत्वा नारदस्य मुखात् रामकथां श्रुत्वा, अलौकिक्या प्रेरणया वाल्मीकिः रामायणम् इति महाकाव्यम् अरचयत्।

संस्कृतक्षेत्रे कविमार्गजुषां प्रेरकस्य वाल्मीकेः पश्चात् अनेके महाकवयः स्व-स्व काव्यं रचयामास। तेषु वेदव्यासस्य महाभारतम्, अष्टादशपुराणानि च, पाणिनेः जाम्बवती-परिणयम्, भासस्य स्वप्नवासवदत्तम्, कालिदासस्य रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम् (खण्डकाव्यम्), भारवेः किरातार्जुनीयम्, माघस्य शिशुपालवधम्, श्रीहर्षस्य नैषधम्, बाणस्य कादम्बरी (गद्यम्), दण्डिनः दशकुमारचरितम् (गद्यम्) इत्यादीनि प्रसिद्धानि काव्यानि संस्कृतसाहित्यस्य सुषमां वर्धयन्ति।

अभ्यासप्रश्नाः

1. संस्कृतसाहित्यजगति आदिकाव्यम् आदिकवेश्च नाम्ना कः प्रसिद्धः ?

2. वाल्मीकेः पूर्वनाम किम् तथा च तस्य कार्यं किमासीत् ?

3. रत्नाकरस्य नाम वाल्मीकिः इति कथं प्रसिद्धम् ?

4. रत्नाकरं राममन्त्रं कः उपदिष्टवान् ?

5. पञ्च संस्कृतकवीनां तथा च तेषां काव्यानां नामानि लिखत ।

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी (म.प्र.)
(भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयः)

पञ्चदशः पाठः

आकारान्तः सीताशब्दः

(लट् परस्मैपदी आत्मनेपदी च)

भारतदेशस्य रामायणाख्यं लोकमङ्गलकारकं रामस्य वृत्तं महर्षिः वाल्मीकिः रचयामास।

महाराजस्य जनकस्य सुपुत्री भगवती **सीता** आसीत्। पुत्रिकां मङ्गलैः अलङ्कृतां **सीतां** स्वयंवरेण विधिना योग्याय वराय दत्त्वा पाणिग्रहणसंस्कारः कारणीय इति महाराजः जनकः निर्णयम् अकरोत्। यस्य वरस्य कण्ठे स्वयंवरे **सीतया** माला अर्प्यते तस्मै वराय सीता दीयते इति सडिण्डिमम् उद्घोषणाम् अकारयत् महाराजः जनकः। विश्वामित्रेण ऋषिणा, भ्रात्रा लक्ष्मणेन च सह रामः सीतास्वयंवरं गतः। तत्र रामः शिवधनुषः उत्तोलनं करोति। रामेण कृतेन उत्तोलनेन धनुः सशब्दं भग्नमभूत्। तादृशं पराक्रमवन्तं रामं दृष्ट्वा सीता रामाय स्वयंवरमालाम् अर्पयति। विश्वामित्रेण ऋषिणा अनुमतः रामः **सीतायै** मालाम् अर्पयति। विवाहसमनन्तरम् अरुन्धतीनक्षत्रदर्शनेन **सीतायाः** सकाशात् रामः दूरं न गच्छति, रामात् सीता दूरं न गच्छति, तयोः दाम्पत्यं चिरं भवति इति चिन्तनम् अनुसृत्य तयोः विवाहमङ्गलार्थम् अरुन्धतीनक्षत्रदर्शनम् ऋषिः विश्वामित्रः अकारयत्। इत्थं जनकसुपुत्रिकायाः **सीतायाः**, दशरथ-ज्येष्ठपुत्रस्य रामस्य च विवाहमङ्गलं समभूत्।

महाराजः दशरथः कैकेय्याः कृते पूर्वं दत्तान् त्रीन् वरान् निष्पादयितुं रामं वनं प्रति विसर्जयति। सीतारामाभ्यां सह लक्ष्मणः अपि वनं गच्छति। तत्र रामः शबर्या भक्त्या दत्तं बदरफलं खादति।

वनवासकाले सीतारामौ लक्ष्मणश्च पर्णकुटीरे निवसन्ति। मारीचः स्वर्णमृगरूपेण पर्णकुटीरं परितः भ्रामं भ्रामं **सीतायाः** मनः अपहरति । सीता रामं स्वर्णमृगं याचते। रामः स्वर्णमृगं धर्तुं सुदूरं गच्छति। तदा रामस्य आर्तं स्वरं सीता शृणोति। **सीता** त्वरया लक्ष्मणं रामस्य रक्षार्थं प्रेषयति। तस्मिन् समये, रावणः **सीतायाः** हरणं कृत्वा लङ्कां प्रति नयति। अशोकवाटिकायाः अधः राक्षसीनां मध्ये सीतां निगूहति।

अपहृतां सीतां ज्ञात्वा **हे सीते! हे सीते!** इति रामः विलपति, सीतान्वेषणाय तौ रामलक्ष्मणौ अरण्यानि, गिरि शिखरान् च अटतः। अटतोः तयोः किष्किन्धायाम् आदौ हनूमतः परिचयो भवति, ततःपरं सुग्रीवः सखा भवति। रामलक्ष्मणाभ्यां सह जातां मैत्रीं शपथं च अनुसृत्य सीतान्वेषणाय हनूमन्तं लङ्कां प्रति सुग्रीवः प्रेषयति। अशोकवनिकायां सीतायाः स्थितिं हनूमान् स्वयं वृक्षे निलीनः पश्यति। रामदूतस्य लङ्कायां प्राप्तिं रावणाय संसूचयति। रावणेन आदिष्टैः राक्षसैः हनूमतः पुच्छे अग्नौ प्रज्वालिते

सति हनूमान् लङ्कां दहति। ततः सीता सुरक्षिता इति हनूमान् ज्ञात्वा पुनः किष्किन्धां प्रतिष्ठयते। सीतायाः दत्तं रामनामाङ्गुलीयकं रामाय ददाति, सीतया उक्तं यथावत् वृत्तं च तस्मै रामाय निवेदयति।

श्रीरामः कपिसैन्यसमेतः लङ्कां गच्छति। तत्र कपिसैन्यं राक्षसैः सह युध्यते। मेघनादकुम्भकर्णप्रभृतीन् राक्षसान् हत्त्वा, अन्ते रावणस्य वधं कृत्वा लङ्कायाः अयोध्याम् आगच्छति श्रीरामः। तत्रागत्य केषाञ्चिद् दिनानाम् अनन्तरम् सीतायाः पवित्रताविषये अयोध्यावासिनां शङ्का उत्पद्यते। अतः भगवान् श्रीरामचन्द्रः गर्भवतीं सीताम् अयोध्यातः लक्ष्मणेन सह वनं प्रेषयति। तत्र महर्षिः वाल्मीकिः सीतायै आश्रमे आश्रयं ददाति। तत्र आश्रमे सा लवकुशौ प्रसूते, लालनं पालनं च करोति। आश्रमे महर्षिः वाल्मीकिः पुत्र्याम् इव सीतायां स्निह्यति।

ईषद् दिनानन्तरं सीता अयोध्यायाः राजसभायां सर्वेषां पुरतः स्वकीय-मान-सम्मानयोः संरक्षणाय मातुः पृथिव्याः अङ्के स्थित्वा पातालमार्गेण भगवतः विष्णोः सन्निधिं गच्छति।

अभ्यासप्रश्ना:

1. सीता कस्य पुत्री आसीत् तथा च सा स्वयम्वरमालां कम् अर्पयति ?
2. रामायणस्य सारं दशवाक्यै: लिखत ।
3. सीता काभ्यां सह वनं गतवती तथा च वने तस्या: हरणं क: कृतवान् ?
4. प्रचेतस: दशम: पुत्र: क: ?
5. श्रीराम: कस्या: दत्तं बदरीफलं खादति ?

षोडशः पाठः

शिशुगीतम्

गीतं समेषां मनसि आह्लादं आनन्दञ्च जनयति। संस्कृतभाषायामपि कवयः एतादृशानि गानगुणविशिष्टानि पद्यकुसुमानि अरचयन्। आधुनिकसंस्कृतकविषु अन्यतमः डॉ. एच्.आर्. विश्वासः महोदयः। तस्य गीतसङ्कलनात् इदं गीतमुद्धृतमस्ति।

चटक, चटक, रे चटक !
चिवँ चिवँ कूजसि त्वं विहग !

नीडे निवससि सुखेन डयसे
खादसि फलानि मधुराणि।
विहरसि विमले विपुले गगने
नास्ति जनः खलु वारयिता॥ १॥

मातापितराविह मम न स्तः
एकाकी खलु खिन्नोऽहम्।
एहि समीपं चिवँ चिवँ मित्र !
ददामि तुभ्यं बहु धान्यम्॥ २॥

चणकं स्वीकुरु पिब रे नीरं
त्वं पुनरपि रट चिवँ चिवँ चिवँ।
तोषय मां कुरु मधुरालापं
पाठय मामपि तव भाषाम्॥ ३॥

अभ्यासप्रश्ना:

1. शिशुगीतम् इति पाठ: कस्य गीतसंकत्वनात् उद्धृतमस्ति ?
2. चटक: कुत्र कूजति निवसति च ?
3. चटक: कीदृशानि फलानि खादति भवने वागने च विहरति ?

सप्तदशः पाठः

सत्यकामजाबालवृत्तान्तः

(लङ् लृट् लकारः)

छान्दोग्योपनिषदि चतुर्थे अध्याये चतुर्थखण्डतः सत्यकामजाबालवृत्तान्तः प्राप्यते। पुरा सत्यकामः जबालाम् अपृच्छत् अहं ब्रह्मचारीभूय गुरुकुले अध्येतुमिच्छामि। अतः हे मातः! मम किं गोत्रम् इति वद। सा तमाह "नाहं तव गोत्रं जाने। बहुसेवापरायणा अहं यौवने एव त्वां पुत्रम् अलभे। अतः तव गोत्रम् अहं न जाने। माता अहं जबाला अस्मि। पुत्रस्त्वं सत्यकामः असि। अतः जाबालः इति ब्रूहि त्वम्।"

ततः परं सः सत्यकामजाबालः हारिद्रुमतं गौतमम् ऋषिं प्राप्नोति। सत्यकामः जाबालः गौतमऋषेः समीपे गत्वा शिक्षार्थं ऋषिकुले निवसामीत्यवोचत्। गोत्रे पृष्टे सति सत्यकामः आह- सत्यकामः जबालापुत्रः अहं जाबालः, गोत्रं न जानामि। महर्षिगौतम अज्ञातगोत्रस्य सत्यकामस्य सत्यनिष्ठां, जिज्ञासां च अवलोक्य प्रसन्नः गौतमऋषि अकथयत्- त्वां शिष्यत्वेन स्वीकरिष्यामि इति। गौतमः सत्यकामं शिष्यत्वेन स्वीकृत्य चतुश्शतं (४००) गोधनानि दत्त्वा उवाच - भो बालक! त्वम् इमाः धेनूः अनुगच्छ, यदा सहस्रं धेनवः भविष्यन्ति तदा एव मम समीपम् आगच्छ, ततः पूर्वं त्वया न आगन्तव्यम् इति। गुरोः वचनम् अनुसृत्य सत्यकामः अनेकानि वर्षाणि यावत् वने न्यवसत्। एकस्मिन् दिने सहस्रं धेनवः अभवन् तदा एकः वृषभः सत्यकामम् अवदत् – भोः सत्यकाम ३ .... वयं सहस्रसङ्ख्यकाः अभवाम, अतः वयम् आचार्यकुलं गच्छाम। इदानीं त्वम् अस्मान् नयेः। अहं तुभ्यं ब्रह्मविद्यायाः एकं पादं प्रदास्यामि इति। तदनु वृषभः प्रकाशशरीरस्य चतुष्कलस्य ब्रह्मणः वर्णनपुरस्सरं प्राचीदिक्कला दक्षिणीदिक्कला उदीचीदिक्कला च इति सत्यकामं ब्रह्मविद्यायाः पादम् अपाठयत्। प्रकाशशरीरं ब्रह्म य उपास्ते स लोकान् जयति इत्याह च।

सत्यकामः गाः अनुसृत्य गुरुकुलं प्रतिचलन् आसीत्। प्राप्ते सायंकाले अग्न्युपासनाय समिधामाधानम् अकरोत्। तत्र प्राङ्मुखोपविष्टं श्रद्धधानं अग्निः उवाच - भोः सत्यकाम ३ .... इति आह। सत्यकामः प्रतिशुश्राव। तदनु अग्निः अनन्तस्य चतुष्कलस्य ब्रह्मणः वर्णनपुरस्सरं पृथिवीकला, अन्तरिक्षकला, द्युकला, समुद्रकला इति सत्यकामं ब्रह्मविद्यायाः पादम् अपाठयत्। अनन्तं ब्रह्म य उपास्ते स लोकान् जयति इत्याह च।

परस्मिन् दिने प्राप्ते सायंकाले अग्न्युपासनाय समिधामाधानम् अकरोत्। तत्र प्राङ्मुखोपविष्टं श्रद्धधानं हंसः उवाच - भोः सत्यकाम३ ....इति आह। सत्यकामः प्रतिशुश्राव। तदनु हंसः ब्रह्मविद्याम् उपदिष्टवान्। हंसः तदनु ज्योतिष्मतः चतुष्कलस्य ब्रह्मणः वर्णनपुरस्सरं अग्निकला, सूर्यकला, चन्द्रकला,

विद्युत्कला इति सत्यकामं ब्रह्मविद्यायाः पादम् अपाठयत्। ज्योतिष्मत् ब्रह्म य उपास्ते स लोकान् जयति इत्याह च।

ततः परं जलकुक्कुटः (मद्गुः पक्षिविशेषः) ब्रह्मविद्याम् उपदिष्टवान्। परस्मिन् दिने प्राप्ते सायंकाले अग्न्युपासनाय समिधामाधानम् अकरोत्। तत्र प्राङ्मुखोपविष्टं श्रद्धधानं जलकुक्कुटः उवाच - भोः सत्यकाम३..... इति आह। सत्यकामः प्रतिशुश्राव। तदनु जलकुक्कुटः आयतनवतः चतुष्कलस्य ब्रह्मणः वर्णनपुरस्सरं प्राणकला, चक्षुष्कला, श्रोत्रकला, मनःकला इति सत्यकामं ब्रह्मविद्यायाः पादम् अपाठयत्। आयतनवत् ब्रह्म य उपास्ते स लोकान् जयति इत्याह च।

इत्थं ब्रह्मविद्याज्ञानं प्राप्य स आचार्यस्य गौतमस्य समीपं प्राप्तवान्। आचार्यः - भोः सत्यकाम ३ .... इति आह। सत्यकामः प्रतिशुश्राव। आचार्यः अपृच्छत् – सत्यकाम! त्वं ब्रह्मवेत्ता इव प्रतिभासि। त्वां कः ब्रह्मज्ञानम् अनुशशास ?। सत्यकामः पूर्वं यत् ज्ञानं प्राप्तवान् तत् सर्वं निवेदितवान्, आह च - मनुष्येतरे ब्रह्मज्ञानम् अनुशशासुरिति । प्रार्थयामास च -भवन्तः पूज्याः ब्रह्मज्ञानिनः आचार्याः सन्ति, अतः मह्यं साक्षात् ब्रह्मविद्याम् उपदिशन्तु, तदेव मे आचार्यकुले ब्रह्मचारिणः इच्छा इति, उक्तवान् च **"श्रुतं ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यः आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्टं प्रापतीति"। गुरुमुखेन साक्षात् गृहीता विद्या बलीयसी भवति।** तदनु सत्यकामजाबालाय गौतमः ऋषिः ब्रह्मविद्यां प्रोवाच । अतः ज्ञायते गुरुमुखेन प्राप्तं ज्ञानं श्रेयसे भवति, साधीयः भवति, गुरुमुखेन प्राप्ता विद्या साधीयसी, सिद्धिदा, चिरस्थायिनी च जायते इति। उक्तं च तैत्तिरीयोपनिषदि - **"आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्यासन्धिः। प्रवचनं सन्धानम्"** इति।

अभ्यासप्रश्नाः

1. सत्यकामजाबालवृत्तान्तस्य मूलस्त्रोतं किम् ?
2. कः सत्यकामं शिश्यत्वेन स्वीकृत्य चतुश्शतं गोधनानि ददाति ?
3. ब्रह्मविद्यायाः कति पादाः भवन्ति ? तथा च तासाम् उपदेष्टारः के -के सन्ति ?
4. गुरुमुखेन साक्षात् गृहीता कीदृशी भवति ?

अष्टादशः पाठः

सुभाषितानि

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि, न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥१॥
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥२॥
गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥३॥
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥४॥
सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन॥५॥
आलस्यान्मूर्खसंयोगाद् भयाद् रोगनिपीडनात्।
अत्यासक्त्या च मानाच्च षड्भिर्विद्या विनश्यति ॥७॥
गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थेन न लभ्यते॥८॥
सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
सुखिनस्तु कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्॥९॥
गुणिता शतशो विद्या सहस्राऽऽवर्तिता पुनः।
आगमिष्यति जिह्वाग्रे स्थलान् निम्नमिवोदकम्॥१०॥
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥११॥
बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोऽपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥१२॥

अभ्यासप्रश्नाः

1. केषां केषां विद्या विनश्यति ?
2. पिपीलिका शनैः-शनैः कुत्र याति ?

3. विद्या जिह्वाग्रे कथमागमिष्यति ?

4. अस्माभिः किं वक्तवयम् ?

5. विद्या कथं – कथं लभ्यते ?

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम् ,उज्जयिनी (म.प्र.)

(भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयः)

माध्यमेन सञ्चालिता प्रस्ताविता च राष्ट्रीयादर्शवेदविद्यालयः

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम् ,उज्जयिनी (म.प्र.)

(भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयः)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in